बाइबल को जानो

बाइबल की वाचाएं

अडवांस्ड बाइबल स्टडी

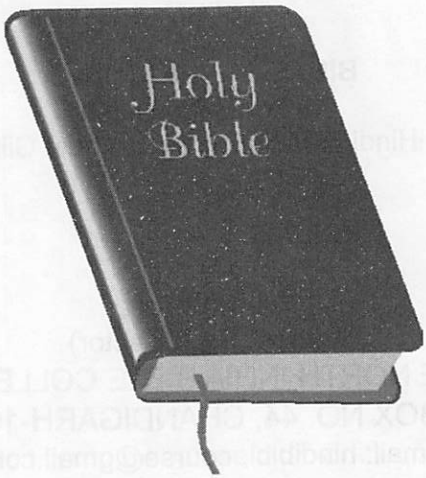

लेखकः जैरी बेट्स
अनुवादकः अरनेस्ट गिल

बाइबल को जानो

बाइबल की वाचाएं

अडवांस्ड बाइबल स्टडी

लेखकः जैरी बेट्स
अनुवादकः अरनेस्ट गिल

BIBLE COVENANTS

Author: Jerry Bates
Hindi Translation by: Earnest Gill

Published by:
Earnest Gill (Director)
THE NORTH INDIA BIBLE COLLEGE,
P.O. BOX NO. 44, CHANDIGARH-160017
email: hindibiblecourse@gmail.com

Printed at :
Azad Offset Printers (P) Ltd.
144, Press Site, Industrial Area, Phase-1, Chandigarh
PH. : 0172-4611489, 2656144, 2657144

Private Circulation Only

परिचय

आपके हाथ में यह पुस्तक इस उम्मीद से दी गई है कि आप इसे पढ़कर बाइबल की वाचाओं के सम्बन्ध में अच्छी तरह से जान पाएं।

प्रेरितों के काम 8 अध्याय में हम पढ़ते हैं कि जब कूश देश की रानी का खजांची यशायाह नबी की पुस्तक में से पढ़ रहा था जो फिलिप्पुस द्वारा उसके पास जाकर उससे यह पूछने पर कि "तू जो पढ़ रहा है क्या उसे समझता भी है?" जवाब में उसने कहा था कि "जब तक कोई मुझे न समझाए तो मैं कैसे समझूं?" बाइबल बताती है कि इसके बाद उसने फिलिप्पुस से विनती की कि वह चढ़कर उसके पास बैठे। फिलिप्पुस ने उसके साथ रथ पर बैठकर उसे प्रभु का वचन बेहतर ढंग से समझाया था जो आज तक मिसाल है। इस कहानी को आप प्रेरितों के काम 8:26 से पढ़ सकते हैं।

बाइबल के गम्भीर छात्र आज भी मानते हैं कि अच्छे टीचर की सहायता से बाइबल के महत्त्वपूर्ण विषयों का समझना आसान हो जाता है। भाई जैरी बेट्स का शुमार उन अच्छे टीचरों में होता है जो अपने विषय को समझते हैं और उन्हें बेहतर ढंग से समझाने की सलाहियत रखते हैं। मैं उन्हें पिछले एक दशक से अधिक समय से जानता हूँ और बाइबल को सिखाने की उनकी ललक से प्रभावित हूँ। उनकी इच्छा यही रहती है कि लोगों का क्लास के रूप में सिखा सकें और वचन से सम्बन्धित उनके मन में उठने वाले प्रश्नों का उत्तर व्यक्तिगत रूप में दे सकें। मेरे लिए यह आशीष की बात है कि मैं उनकी पुस्तकों **बाइबल की वाचाएं, आराधना** और **परमेश्वरत्व** पर परमेश्वर के वचन की उनकी समझ को आप तक पहुंचा पाया हूँ।

बाइबल की वाचाएं पर प्रस्तुत पुस्तक में क्लासरूम में सिखाए जाने के ढंग को ही अपनाया गया है। इसके 6 पाठ हैं जिनमें प्रत्येक पाठ के बाद प्रश्न दिए गए हैं। हमने उन प्रश्नों को पुस्तक के अंत में रखा है। आपके तीनों पुस्तकों में से, हर पाठ के प्रश्न के उत्तर हमें भेजने पर आपको सुन्दर सर्टिफिकेट डाक द्वारा भेजा जाएगा।

हमारी प्रार्थना है कि इस पुस्तक के पढ़ने के द्वारा आपको आशीष मिले।

प्रभु के लिए आपका सेवक

अरनेस्ट गिल
P.O. Box No. 44,
Chandigarh-160017

बाइबल की वाचाएं

विषय

1. बाइबल की वाचाएं 1
2. मूसा की व्यवस्था 4
3. मसीह की व्यवस्था 7
4. नई वाचा की श्रेष्ठता 10
5. दो स्त्रियां और दो व्यवस्थाएं 13
6. नई वाचा की व्यावहारिक प्रासंगिकता 16

1

बाइबल की वाचाएं

यह अध्ययन बड़ा ही आवश्यक है बेशक बहुत बार इस विषय को नज़रअन्दाज़ किया जाता है। मसीही समूहों के बीच पाए जाने वाले अलग-अलग मतों के मुख्य कारणों में से एक वाचाओं की नासमझी का होना है। अधिकतर लोग केवल यह मान लेते हैं कि पूरी बाइबल ही परमेश्वर का वचन है इस कारण हमें इसे पूरे का पूरा मानना आवश्यक है। वास्तविकता यह है कि कोई भी इसे पूरे का पूरा मानने की कोशिश भी नहीं करता। पुराना नियम कई प्रकार के जानवरों की बलियों की आज्ञा देता है पर किसी ऐसे व्यक्ति को नहीं जानता जो परमेश्वर की आराधना में पशुओं के बलिदान आज भी देता हो। इसलिए बाइबल की वाचाओं का गम्भीरतापूर्वक अध्ययन बड़ा ही आवश्यक है।

वाचा क्या होती है?

हमारे इस अध्ययन में पहला कदम यह तय करना है कि असल में वाचा है क्या। इसे सरल शब्दों में कहें तो वाचा एक समझौता है। यह दो पक्षों के बीच हुआ एक समझौता है, जिसमें दोनों पक्षों की उस समझौते को पूरा करने के लिए अलग-अलग ज़िम्मेदारियां तय होती हैं। प्राचीन जगत में वाचाएं दो तरह की होती थीं। एक तरह से यह दो बराबर के पक्षों के बीच समझौता था, जैसे दो व्यक्तियों के बीच हुआ समझौता। आज की तरह दो देशों के बीच होने वाले समझौतों की तरह ही वे ऐसी बातचीत करते और उससे एक सहमति बनाते, जिस पर दोनों पक्ष राजी हो सकते थे। दूसरी किस्म का समझौता किसी छोटे व्यक्ति के साथ बड़े व्यक्ति का होता था जैसे दूसरे देश पर विजय पाने का। बड़े पक्ष की कुछ मांगें और प्रतिज्ञाएं होती थीं। छोटा पक्ष उन को मानने या फिर परिणाम भुगतने के लिए बाध्य होता था। साफ़ है कि ऐसा समझौता मनुष्य के साथ बांधी जाने वाली वाचाओं के साथ है। मनुष्य को परमेश्वर के साथ सौदेबाजी करके मांगें रखने का कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह हमारा सृष्टिकर्ता है।

ऐसी वाचाएं आम तौर पर दोनों पक्षों द्वारा शपथ और गवाहों की उपस्थिति में बांधी जाती थीं। उन्हें किसी प्रकार दृढ़ भी किया जाता है, जैसे कोई यादगार बनाकर या एक-दूसरे को उपहार देकर। यह इन वाचाओं की गम्भीरता को दिखाता है। वाचा बांध लिए जाने के बाद उन्हें बिना गम्भीर परिणामों के तोड़ा नहीं जा सकता। गलातियों 3:15 में पौलुस ने वाचाओं के इस पहलू की बात की: "हे भाइयो, मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं, कि मुनष्य की वाचा भी जो पक्की हो जाती है, तो न कोई उसे टालता है और न उस में कुछ बढ़ाता है" पौलुस के कहने का मतलब था कि यदि आदमी की बांधी वाचाएं इतनी मज़बूत थीं तो फिर परमेश्वर के साथ बांधी गई वाचा

इससे कितनी बढ़कर होतीं। यह ध्यान देना भी आवश्यक है कि ये वाचाएं केवल उन्हीं लोगों पर लागू होती थीं, जिनके साथ बांधी जाती थीं। यदि मैंने A नामक किसी व्यक्ति के साथ समझौता किया हो वह समझौता उसके साथ ही होगा। मैं B या किसी दूसरे व्यक्ति के साथ समझौते को मानने को बाध्य नहीं। अगले पाठों में इस बात को ध्यान में रखना आवश्यक होगा।

परमेश्वर द्वारा बांधी गई अलग-अलग वाचाएं

जैसा हमने कहा है कि परमेश्वर ने अलग-अलग समयों पर अलग-अलग लोगों के साथ अलग-अलग वाचाएं बांधी हैं। पहली वाचा आदम के साथ बांधी थी। परमेश्वर ने एक बाग बनाया और उस बाग में आदम और हव्वा को रखा। परमेश्वर ने उन्हें सब कुछ दिया। यह पृथ्वी पर स्वर्गलोक ही था। परमेश्वर ने वचन दिया कि वे सदा तक जीवित रहेंगे, पर साथ में केवल एक शर्त दे दी। वे भले और बुरे के ज्ञान के वृक्ष का फल नहीं खा सकते। आदम और हव्वा ने उस मना किए हुए फल को खा लिया। वाचा को तोड़ डाला और उन्हें उस पाप के परिणामस्वरूप बाग को छोड़ना पड़ा।

दूसरी वाचा। हम पढ़ते हैं कि दूसरी वाचा नूह के साथ बांधी गई। परमेश्वर ने वायदा किया कि वह प्रलय के साथ संसार को दोबारा कभी नष्ट नहीं करेगा। मेघधनुष मनुष्य और परमेश्वर के बीच बांधी गई उसी वाचा का चिह्न है (उत्पत्ति 9:9-17)। इस वाचा में नूह को फलने-फूलने और पृथ्वी पर फैल जाने की आज्ञा भी शामिल है (उत्पत्ति 8:17)।

एक और वाचा दाऊद के साथ बांधी गई थी। 2 शमूएल 7 में हम दाऊद को दिए परमेश्वर के इस वायदे को देखते हैं "जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा, तब मैं तेरे निज वंश को तेरे पीछे खड़ा करके उसके राज्य को स्थिर करूंगा। वरन तेरा घराना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा; तेरी गद्दी सदैव बनी रहेगी" (2 शमूएल 7:12, 16)। 2 शमूएल 23:5 में दाऊद इस वायदे को वाचा कहता है। भजन 132:12 में फिर इसे वाचा कहा गया है: "यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा का पालन करें और जो चितौनी मैं उन्हें सिखाऊंगा, उस पर चलें, तो उनके वंश के लोग भी तेरी गद्दी पर युग-युग बैठते चले जाएंगे।" हम देख सकते हैं कि परमेश्वर ने वायदा किया कि दाऊद का एक वंश सदा के लिए उसकी गद्दी पर बैठेगा।

परमेश्वर ने अब्राहम के साथ भी एक वाचा बांधी। इस वाचा के बारे में हम मुख्यतया उत्पत्ति 12:1-3 में पढ़ते हैं: "यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊंगा, और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूंगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूंगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" इस वाचा में अब्राहम की ओर से परमेश्वर द्वारा चार मुख्य वायदे मिलते हैं। अब्राहम ने एक बड़ी जाति का पिता बनना था; इस जाति को रहने के लिए एक देश मिलना था। परमेश्वर ने उसे आशीष देने का वायदा किया; और अब्राहम के द्वारा पृथ्वी की सब जातियों ने आशीष पानी थी। यह अंतिम वायदा आत्मिक किस्म का था, जबकि तीन अन्य वायदे शारीरिक थे। यह आत्मिक वायदा यीशु के आने का छुपा हुआ हवाला था। जिसने

केवल अब्राहम के घराने के लिए नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए आत्मिक उद्धार लाना था।

बाद में अब्राहम की संतान के मिस्र की दासता से निकल जाने के बाद परमेश्वर उन्हें सीनै पहाड़ पर ले गया और वहां परमेश्वर ने मूसा और इस्राएलियों के साथ एक वाचा बांधी? "तब मूसा पर्वत पर परमेश्वर के पास चढ़ गया, और यहोवा ने पर्वत पर से उसको पुकारकर कहा, याकूब के घराने से ऐसा कह, और इस्राएलियों को मेरा यह वचन सुना, कि तुम ने देखा है कि मैं ने मिस्रियों से क्या-क्या किया; तुम को मानो उकाब पक्षी के पंखों पर चढ़ाकर अपने पास ले आया हूं। इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही है" (निर्गमन 19:3-6)। इस वाचा में दस आज्ञाएं शामिल थीं: "मूसा तो वहां यहोवा के संग चालीस दिन और रात रहा; और तब तक न तो उस ने रोटी खाई और न पानी पीया। और उस ने उन तख्तियों पर वाचा के वचन अर्थात दस आज्ञाएं लिख दीं" (निर्गमन 34:28)। अंतिम वाचा सारी मनुष्यजाति के साथ बांधी गई है, जो क्रूस पर यीशु की मृत्यु के साथ पक्की हुई। हमारे इस अध्ययन में खासकर दो अंतिम वाचाओं की बात है। हमारा यह अध्ययन खासकर इन दो वाचाओं पर है। इन दो वाचाओं की उलझन के कारण ही आज धार्मिक जगत में पाई जाने वाली फूट को देखते हैं। इसलिए अगले पाठों में हम इन दो वाचाओं के विभिन्न पहलुओं पर और विस्तार से बात करेंगे।

2

मूसा की व्यवस्था

मूसा की व्यवस्था इस्राएल के लोगों को सीनै पहाड़ पर मिली थी। "इसलिये अब यदि तुम निश्चय मेरी मानोगे, और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो सब लोगों में से तुम ही मेरा निज धन ठहरोगे; समस्त पृथ्वी तो मेरी है। और तुम मेरी दृष्टि में याजकों का राज्य और पवित्र जाति ठहरोगे। जो बातें तुझे इस्राएलियों से कहनी हैं वे ये ही है" (निर्गमन 19:5-6)। ध्यान दें कि परमेश्वर ने इस्राएलियों को विशेष प्रतिज्ञाएं दी थीं। उसने प्रतिज्ञा की कि यदि वे उसकी बात मानते हैं तो वह उन्हें अन्य सब लोगों से बढ़कर एक विशेष खज़ाना बनाएगा, ऐसा खज़ाना जिसकी रक्षा बड़ी सावधानी से की जाएगी। इसका अर्थ है कि उन्हें परमेश्वर की विशेष आशीषें प्राप्त होनी थी, सब लोगों ने इसे आज्ञा को खूशी खूशी मान लिया। (निर्गमन 19:8)। इस्राएलियों के इस वाचा को खुशी खुशी मान लेने के बावजूद हम देखते हैं कि इस्राएलियों ने अपने पूरे इतिहास में इस वाचा को जो परमेश्वर के साथ उन्होंने बांधी थी बार बार तोड़ा।

व्यवस्था मिलने के समय इस्राएली एक नई जाति थे। हर जाति को व्यवस्था यानी नियमों की आवश्यकता होती है और परमेश्वर ने उन्हें वह व्यवस्था दी जिसके द्वारा उन्होंने अपने जीवन को चलाना था। मूसा को दी गई व्यवस्था में आत्मिक और अस्थाई दोनों नियम थे। अन्य शब्दों में, व्यवस्था में वे दिशानिर्देष थे जिनके उन्होंने एक दूसरे के साथ सम्बन्ध रखने के नियमों के साथ साथ परमेश्वर की आराधना और सेवा करनी थी। इन नियमों में याजकाई, बलिदान भेंट करने आदि के निर्देषों के अन्य बहुत से नियमों के साथ साथ दस आज्ञाएं भी थीं। यह नियम केवल यहूदियों को दिए गए थे न कि अन्यजातियों को।

हमें इस पाठ को ध्यान रखना आवश्यक है कि परमेश्वर ने मूसा की व्यवस्था सदा तक देने के इरादे से कभी नहीं दी। यिर्मयाह के लेखों के द्वारा परमेश्वर ने कहा, "फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घरानों से नई वाचा बान्धूंगा" (यिर्मयाह 31:31)। जब कोई नई वाचा या समझौता किया जाता है तो पुरानी वाचा या समझौता स्वत: ही रद्द हो जाता है। यह नई वाचा पुरानी वाचा के साथ जोड़ी नहीं गई है बल्कि यह नई वाचा पुरानी वाचा के स्थान पर दी गई है। यह नई वाचा मसीह की व्यवस्था है जिसे क्रूस पर अपनी मृत्यु के समय मसीह ने बांधा।

मूसा की व्यवस्था के उद्देश्य

कुछ पल के लिए आइए मूसा की व्यवस्था के उद्देश्य पर गौर करते हैं। लोग अक्सर हैरान होते हैं कि परमेश्वर ने शुरू में भी वह व्यवस्था क्यों नहीं दे दी जिसे वह सब लोगों को देना

चाहता था। ऐसा क्यों कि उसने पहले एक व्यवस्था दी और फिर उसकी जगह एक और दे दी।

व्यवस्था का एक उद्देश्य पाप की गम्भीरता को समझाना था। मनुष्य का स्वभाव पाप की गम्भीरता को कम कर देना का है। यह हमारे चारों ओर होता है इसलिए हमारे लिए यह कोई बड़ी बात नहीं लगती। खासकर "छोटे छोटे" पापों पर विचार करते हैं। परन्तु पवित्र परमेश्वर किसी भी पाप के साथ सहभागिता या मेल नहीं रख सकता। हबक्कूक नबी ने इस बात को समझा जब उसने हबक्कूक 1:13 में लिखा: "तेरी आंखें ऐसी शुद्ध हैं कि तू बुराई को देख ही नहीं सकता, और उत्पात को देखकर चुप नहीं रह सकता; फिर तू विश्वासघातियों को क्यों देखता रहता, और जब दुष्ट निर्दोष को निगल जाता है, तब तू क्यों चुप रहता है?" इस प्रकार व्यवस्था का एक उद्देदश्य मनुष्य को यह समझने में सहायता करना था कि पाप क्या है और यह कितना गम्भीर है। रोमियों 3:20 में लिखा "क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, इसलिये कि व्यवस्था के द्वारा पाप की पहिचान होती है" और रोमियों 7:7 में उसने लिखा, "तो हम क्या कहें? क्या व्यवस्था पाप है? कदापि नहीं! वरन् बिना व्यवस्था के मैं पाप को नहीं पहिचानता : व्यवस्था यदि न कहती, कि लालच मत कर तो मैं लालच को न जानता।"

एक और उद्देश्य लोगों को मसीह तक लाना था। व्यवस्था को यीशु मसीह के आने के लिए एक लोग और एक जाति को तैयार करने के लिए बनाया गया था जो सब लोगों के लिए उद्धार ला सकता था। "इसलिए व्यवस्था मसीह तक पहुचाने को हमारा शिक्षक हुई, कि हम विश्वास से धर्मी ठहरें। परन्तु जब विश्वास आ चुका, तो हम अब शिक्षक के अधीन न रहे" (गलातियों 3:24-25)। शिक्षक या स्कूल मास्टर वह होता है जो बच्चों को स्कूल तक ले जाता है जहां उन्हें शिक्षक द्वारा पढ़ाया जाता है। शिक्षक पर उसका अधिकार उनके घर से जाने से लेकर उनके शिक्षक तक पहुंचने के बीच तक के समय तक केवल थोड़ी देर का होता है जिसमें बच्चे उस शिक्षक के अधिकार में होते हैं। इस प्रकार पुरानी व्यवस्था को उत्तम गुरु यानी यीशु तक लाने के लिए तैयार किया गया था। रोमियों 10:4 में इस विचार को और विस्तार से दिखाया गया है जिसमें पौलुस बताता है, "क्योंकि हर एक विश्वास करने वाले के लिये धार्मिकता के निमित्त मसीह व्यवस्था का अन्त है।"

व्यवस्था का एक अंतिम उद्देश्य की बात करेंगे वह यह है कि व्यवस्था को आने वाली उत्तम बातों की छाया बनने के लिए बनाया गया है। इब्रानियों की पुस्तक विशेषक इस विचार को बताती है। "क्योंकि व्यवस्था जिसमें आनेवाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उनका असली स्वरूप नहीं, इसलिए उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं" (इब्रानियों 10:1)। छाया पेड़ की परछाई जैसी होती है। यह असल चीज़ ही हलकी सी झल्क देती है। वास्तव में उस असल से बहुत कम होती है। इस प्रकार व्यवस्था को सिद्ध बलिदान की आवश्यकता के लिए लोगों को सिखाने के लिए दिया गया था। जिसमें हमारे पापों को लिए लहू का बलिदान देने के लिए मसीह ने आना था। पुरानी वाचा के याजक केवल स्वर्गीय वास्तविकताओं की नकल या छाया थे।

व्यवस्था को मनुष्य के लिए मसीह को ग्रहण करने, आने के उसके उद्देश्य को बेहतर ढंग से समझने और सबसे बढ़कर उद्धारकर्त्ता की हमारी आवश्यकता को समझाने के लिए दिया गया था। अगले पाठ में हम उस वाचा को देखेंगे जिसे परमेश्वर ने यीशु मसीह के आने के साथ मनुष्य के बांधा।

3

मसीह की व्यवस्था

हमने देखा है कि व्यवस्था का एक उद्देश्य था और जब वह उद्देश्य पूरा हो गया तो इसे हटाने का समय आ गया। मत्ती 5:17-18 में यीशु ने कहा, " 'यह न समझो, कि मैं व्यवस्था या भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों को लोप करने आया हूं, लोप करने नहीं, परन्तु पूरा करने आया हूं। क्योंकि मैं तुम से सच कहता हूं, कि जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएं, तब तक व्यवस्था से एक मात्रा या बिन्दु भी बिना पूरा हुए नहीं टलेगा।" बहुत से लोग यीशु के शब्दों के अर्थ को घुमाना चाहते हैं और यह कहना चाहते हैं कि यीशु व्यवस्था को केवल पूरा करने के लिए आया था न कि इसे हटाने के लिए। परन्तु जब कोई चीज़ अपना उद्देश्य पूरा कर लेती है तो उसे रखने का क्या मतलब होता है? ध्यान दें कि यीशु ने क्या कहा था। वह व्यवस्था को पूरा करने के लिए आया था और उसे कहा था कि बिना पूरा हुए व्यवस्था एक भी बात नहीं टलेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि पूरा हो जाने पर यह टल जानी थी। इस प्रकार यीशु कह रहा था कि व्यवस्था के पूरी तरह से पूरा हो जाने पर, जो कि क्रूस पर हो गया था, व्यवस्था को हटा दिया जाना था। अपनी मृत्यु से थोड़ा पहले यीशु ने यह सरल शब्द कहे थे, "पूरा हुआ" (यूहन्ना 19:30)। उस काम को जिसे यीशु पूरा करने के लिए आया था यानी व्यवस्था को पूरा करना, मनुष्य के लिए पाप का बलिदान देना और एक नई और उत्तम वाचा ठहराना, पूरा हो गया था।

परन्तु हमारे पास एक नई वाचा है इसलिए हमें यह नहीं मान लेना चाहिए कि पुरानी व्यवस्था किसी काम की नहीं है। यह आज भी हमें कुछ निर्देश देती ही रहती है, रोमियों 15:4 में पौलुस ने लिखा है, "जितनी बातें पहले से लिखी गईं, वे हमारी ही शिक्षा के लिये लिखी गईं हैं कि हम धीरज और पवित्रशास्त्र के प्रोत्साहन द्वारा आशा रखें।" पुराना नियम हमें परमेश्वर, पाप, मसीह के आने, बलिदानों, आदि बहुत सी बातों के बारे में वैसे ही सिखाता है जैसे यह सदियों पहले यहूदियों को सिखा सकता था। बिना पुराने नियम के हम नये नियम के बहुत से भागों को समझ नहीं सकते थे। इसलिए यह अध्ययन आज भी उपयोगी है पर परमेश्वर की सेवा में हमें क्या करना है और कैसे करना है यह बताने का अधिकार इसे नहीं है। अब हम पुरानी व्यवस्था के अधीन नहीं रहे क्योंकि यह पुरानी वाचा का भाग है।

यीशु एक नई और उत्तम वाचा को ठहराने के लिए आया। क्रूस पर यीशु की मृत्यु के समय उसने पुरानी व्यवस्था को क्रूस पर कीलों से जड़ दिया (कुलुस्सियों 2:14)। इसके साथ ही उसने एक नई व्यवस्था ठहरा दी। "क्योंकि जहां वाचा बान्धी गई है वहां वाचा बान्धनेवाले की मृत्यु का समझ लेना भी अवश्य है। क्योंकि ऐसी वाचा मरने पर पक्की होती है, और जब तक वाचा बान्धने वाला जीवित रहता है, तब तक वाचा काम की नहीं होती। इसी लिए पहिली वाचा

बिना लोहू के नहीं बान्धी गई" (इब्रानियों 9:16-18)। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक हमें मसीह की आवश्यकता को समझाने के लिए एक उदाहरण का इस्तेमाल कर रहा है। लोग आम तौर पर वसीयत करते हैं जिसमें वे बता देते हैं कि उनके मरने के बाद उनकी सांसारिक सम्पत्ति किसे और कैसे दी जानी चाहिए। परन्तु जब तक वसीयत करने वाला व्यक्ति मर नहीं जाता, तब तक वह वसीयत किसी काम की नहीं होती। वह जब चाहे उस वसीयत को बदल सकता है और उसके बाद की गई कोई भी वसीयत पहले की गई वसीयत को रद्द कर देती है। इसी प्रकार से मसीह की नई वाचा वसीयत के देने वाले यानी यीशु की मृत्यु से पहले किसी काम की नहीं थी। उसने अपनी नई वाचा को देने के लिए अपना लहू वैसे ही बहाया जैसे जानवरों के लहू के साथ मूसा की व्यवस्था दी गई थी। इस प्रकार नई वाचा को पुरानी वाचा की जगह क्रूस पर स्थापित किया गया। यीशु उत्तम वाचा का जामिन बना (इब्रानियों 7:22)।

यह नई वाचा पुरानी वाचा में जोड़ी नहीं गई बल्कि इसने उसकी जगह ले ली। यह तथ्य ही कि नई वाचा है यह संकेत देता है कि पुरानी वाचा को हटा दिया गया है। "नई वाचा के स्थापन से उस ने प्रथम वाचा को पुरानी ठहराई, और जो वस्तु पुरानी और जीर्ण हो जाती है उसका मिट जाना अनिवार्य है" (इब्रानियों 8:13)। "फिर यह भी कहता है, कि देख, मैं आ गया हूं, ताकि तेरी इच्छा पूरी करूं; निदान, वह पहिले को उठा देता है, ताकि दूसरे को नियुक्त करे" (इब्रानियों 10:9)। वह दो वाचाओं की आज्ञा नहीं दे सकता। जैसा कि हमने पिछले पाठ में देखा था कि अब हम मसीह में विश्वास के अधीन हैं और अब हम पुरानी व्यवस्था यानी शिक्षक के अधीन नहीं रहे (गलातियों 2:25)। न ही हमें वापस जाने या नये के साथ पुराने को मिलाने की इच्छा करनी चाहिए। गलातियों 5:4 में पौलुस ने लिखा, " तुम जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते हो, मसीह से अलग और अनुग्रह से गिर गए हो।" हमारा उद्धार अनुग्रह से हुआ है (इफिसियों 2:8), पर जब हम पुरानी व्यवस्था को मानने का प्रयास करते हैं तो पौलुस साफ़ कहता है कि हम अनुग्रह से गिर जाते हैं और इस प्रकार उस एकमात्र मार्ग को, जिससे हमारा उद्धार हो सकता है खो देते हैं। जैसा कि उम्मीद की जा सकती है कि यह नई व्यवस्था पुरानी व्यवस्था से कहीं अधिक महिमा भरी है और इसमें उससे कहीं उत्तम बातें हैं। व्यवस्था इतनी महिमायुक्त थी कि इसे मूसा को दिए जाने के समय, इस्राएली उसके चेहरे के तेज के कारण उसकी ओर देख नहीं पाए थे (2 कुरिन्थियों 3:7)। "क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा और भी तेजोमय क्यों न होगा" (2 कुरिन्थियों 3:11)। इस संदर्भ में घटता जाने वाला पत्थरों पर लिखी गई सेवकाई को कहा गया है, या यूं कहें कि दस आज्ञाओं को। इफिसियों 2:15 में पौलुस ने आगे घोषणा की, "और अपने शरीर में बैर अर्थात वह व्यवस्था जिस की आज्ञाएं विधियों की रीति पर थीं, मिटा दिया, कि दोनों से अपने में एक नया मनुष्य उत्पन्न करके मेल करा दे।" ध्यान दें कि दोनों ही वचनों में हमें यह स्पष्ट बात मिलती है कि पुरानी व्यवस्था हट रही थी या उसे मिटाई जाने वाली थी और इसमें दस आज्ञाएं भी होनी थी।

परमेश्वर ने ऐसी व्यवस्था क्यों देनी थी, जो दोषयुक्त हो यानी वह न देती हो जिसकी आवश्यकता थी, पापों की क्षमा। व्यवस्था वास्तव में दोषयुक्त नहीं थी। इसने वह काम किया जिसके लिए इसे बनाया था, यानी इसने लोगों को पापों की समझ दी और मसीह तक लेकर आई जो जीवन दे सकता है। समस्या व्यवस्था की नहीं थी। समस्या तो मनुष्य की निर्बलता और

उसके पापी होने की थी जो व्यवस्था को पूरा नहीं कर पाया।

अब जबकि व्यवस्था को हटा दिया गया है तो हम इस बात के लिए कि आज हमें क्या करना चाहिए और कैसे करना चाहिए उसके अधिकार के लिए पुराने नियम के प्रावधानों में वापस नहीं जा सकते। दस आज्ञाओं सहित व्यवस्था की कोई भी बात आज प्रभावी नहीं है। इसका अर्थ यह हुआ कि यह बहुत सी धार्मिक बातें जो आज पाई जाती हैं उनका कोई अधिकार नहीं है क्योंकि वह अधिकार केवल पुराने नियम में मिलता है। इसमें याजकाई, दशमांस, सब्त को दिन को मानना और गाने में वाद्य संगीत शामिल हैं। यही कारण कि आज जानवरों के बलिदान नहीं दिए जाते। ऐसा नहीं है कि हम पुराने नियम की कोई आज्ञा जो हमें अ च्छी ल गती हो उसे उठाकर नये नियम में डाल दें। असल में अगर हम व्यवस्था की एक बात मानते हैं तो हम पूरी की पूरी व्यवस्था को मानने के बाध्य हैं (गलातियों 5:3)। हमें पुरानी व्यवस्था की एक भी बात मानने की इच्छा नहीं करनी चाहिए। क्योंकि नई व्यवस्था उससे कहीं उत्तम है। अगले पाठ में हम उन कुछ उत्तम बातों पर चर्चा करेंगे।

4

नई वाचा की श्रेष्ठता

बहुत सी बातें हैं जिनमें नई वाचा पुरानी वाचा से श्रेष्ठ है और हम उन सब बातों पर पूरी चर्चा नहीं कर सकते। इब्रानियों की पुस्तक का लेखक इस विषय पर एक अच्छी चर्चा देता है सो हम उन कुछ अंतरों की बात करेंगे जिसका उसने उल्लेख किया है।

उत्तम याजकाई

पुरानी वाचा में एक याजकाई दी गई थी जिसमें याजक लोग लोगों की ओर से बलिदान भेंट करते थे। लोगों को सीधे परमेश्वर तक जाने की अनुमति नहीं थी बल्कि उन्हें अपने बलिदान और भेंटों को याजक के पास लाना होता था, जो उन्हें परमेश्वर को चढ़ाता था। यह याजक लेवी के गोत्र से होते थे और महायाजक हारून के वंश में से ठहराया जाता था। यह याजक साधारण लोग ही होते थे जिनकी अपनी अपनी कमजोरियां और खोट होते थे। इस से वे पूरी तरह से लोगों के साथ सहानुभूति कर सकते थे क्योंकि वे भी मनुष्य ही थे। जैसा कि हम इब्रानियों 5:2-3 में पढ़ते हैं, "और वह अज्ञानों, और भूले भटकों के साथ नर्मी से व्यवहार कर सकता है इसलिए कि वह आप भी निर्बलता से घिरा है। और इसी लिए उसे चाहिए, कि जैसे लोगों के लिए, वैसे ही अपने लिए भी पाप-बलि चढ़ाया करे।" याजक किसी भी अन्य व्यक्ति की तरह ही पापी ही होता था इसलिए उसे पहले अपने लिए बलिदान भेंट करना होता था, उसके बाद वह दूसरों के लिए बलिदान भेंट कर सकता था।

लेकिन नई वाचा में हमारे पास कहीं श्रेष्ठ महायाजक यानी यीशु है। "सो जब हमारा ऐसा बड़ा महायाजक है, जो स्वर्गों से होकर गया है, अर्थात परमेश्वर का पुत्र यीशु; तो आओ, हम अपने अंगीकार को दृढ़ता से थामे रहे। क्योंकि हमारा ऐसा महायाजक नहीं, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ दुखी न हो सक; बरन् वह सब बातों में हमारी नाईं परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला। इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे" (इब्रानियों 4:14-16) हमारे पास एक ऐसा महायाजक भी है जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति कर सकता है क्योंकि वह मनुष्य बना और हमारी ही तरह परखा भी गया। परन्तु वह कभी परीक्षा में नाकाम नहीं हुआ क्योंकि उसने कभी पाप नहीं किया, "सो ऐसा ही महायाजक हमारे योग्य था, जो पवित्र, और निष्कपट और निर्मल, और पापियों से अलग, और स्वर्ग से भी ऊंचा किया हुआ हो" (इब्रानियों 7:26)। इस कारण पुरानी याजकाई से नई याजकाई कहीं श्रेष्ठ है।

उत्तम प्रतिज्ञाएं

यह नई वाचा अंदरूनी और आत्मिक है। ''फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे'' (इब्रानियों 8:10)। पहली वाचा को पत्थर की पट्टियों लिखा गया था परन्तु नई वाचा को हमारी हृदयों पर लिखा गया है। इसका अर्थ यह नहीं है कि परमेश्वर ने हमारे मनों में अपने वचन को सीधे डाल दिया है। यह ज्ञान हमें वचन का अध्ययन करने और उसे सीखने से मिलता है। ''भविष्यद्वक्ताओं के लेखों में यह लिखा है: 'वे सब परमेश्वर की ओर से सिखाए हुए होंगे।' जिस किसी ने पिता से सुना और सीखा है, वह मेरे पास आता है'' (यूहन्ना 6:45)। ध्यान दें कि हमें परमेश्वर के वचन से सुनते और सीखते रहना आवश्यक है, परन्तु अब यह वचन हमारे मनों पर लिखा गया है। पुरानी वाचा में उसके लाभ लेने के लिए शारीरिक रूप में जन्म लेना आवश्यक होता था, उसके बाद उसे परमेश्वर के बारे में बताया जाता था। अब पहले सीखकर मन से परमेश्वर के अधीन हुआ जाता है और फिर परमेश्वर के राज्य के लोग बनते हैं। परमेश्वर के वचन की बातें जब तक मन पर खुद नहीं जाती तब तक यह शक्तिहीन है।

अब हमारा परमेश्वर के साथ और निकट सम्बन्ध है। ''फिर प्रभु कहता है, कि जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने के साथ बान्धूंगा, वह यह है, कि मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा, और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरे लोग ठहरेंगे'' (इब्रानियों 8:10)। यह शब्द कोई नए नहीं है क्यों कि यह शब्द लैव्यव्यवस्था 26:12 में भी मिलते हैं। फिर भी अब इनका अर्थ अधिक स्पष्ट हो जाता है। पुरानी वाचा असल में परमेश्वर और उसके लोगों के बीच एक बहुत बड़ी दूरी रखती थी। इसे मन्दिर में पर्दे और याजकाई के द्वारा समझाया गया था। अब सब लोग सीधे परमेश्वर तक पहुंच कर सकते हैं। हर देश के सब मसीही, पुरुष हों या स्त्रियां पुराने नियम के याजकों के समान हैं। ''प्रभु निकट है'' (फिलिप्पियों 4:5)। हम ''परमेश्वर की शान्ति, जो समझ के बिलकुल परे है''(फिलिप्पियों 4:7)। ''और हर एक अपने देशवाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान क्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे'' (इब्रानियों 8:11)। जैसा कि मैंने पहले कहा था पुरानी वाचा ने व्यक्ति पुरानी वाचा में शारीरिक रूप में जन्म लेता था। बाद में उसे वाचा की शर्तें बता दी जाती थीं। औरतों के लिए यह एक व्यक्तिगत समर्पण के बजाय पारिवारिक या राष्ट्रीय रस्म थी। बहुतों ने परमेश्वर की शिक्षाओं को सीखकर भी दिल से नहीं माना। नई वाचा में हम वाचा में प्रवेश करने से पहले आत्मिक रूप में जन्म लेकर परमेश्वर को जानते हैं (यूहन्ना 3:3, 5)। नई वाचा हर जाति के सब लोगों के लिए भी है क्योंकि पुरानी वाचा केवल इस्राएल जाति के साथ बांधी गई थी।

उत्तम बलिदान

''क्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरण करूंगा'' (इब्रानियों 8:12)। पुरानी वाचा में असली क्षमा नहीं थी। ''क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और

बकरों का लोहू पापों को दूर करे" (इब्रानियों 10:4)। पुराने बलिदानों का लहू परमेश्वर के मेमने की ओर ईशारा करते थे "जो जगत का पाप उठा ले जाता ह" (यूहन्ना 1:29)। पुरानी नियम के बलिदान पापों की पूर्ण क्षमा नहीं बल्कि पापों का "स्मरण" कराते थे (इब्रानियों 10:3)। पर मसीह में परमेश्वर हमारे पापों को स्मरण नहीं रखता। यीशु ने अपने आपको सिद्ध बलिदान के रूप में दे दिया। "वैसे ही मसीह भी बहुतों के पापों को उठा लेने के लिए एक बार बलिदान हुआ और जो लोग उस की बाट जोहते हैं, उसके उद्धार के लिए दूसरी बार बिना पाप के दिखाई देगा" (इब्रानियों 9:28)। "उसी इच्छा से हम यीशु मसीह की देह के एक ही बार बलिदान चढ़ाए जाने के द्वारा पवित्र किए गए हैं" (इब्रानियों 10:10)। यीशु ने हर युग में सब लोगों के लिए एक ही बलिदान दे दिया। अब पुराने नियम में दिए जाने वाले जानवरों की तरह बार बार बलिदान देने की कोई आवश्यकता नहीं है। जैसे कि हमने देखा है, पुरानी वाचा पर इस नई वाचा की कई बढ़ते हैं। और भी बहुत सी बातें बताई जा सकती हैं पर यह दिखाने के लिए कि उत्तम वाचा का मध्यस्थ सचमुच में मसीह है इतना ही काफ़ी है। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम नई वाचा के लोग हैं और चाहे कितना भी प्रलोभन हो हम वाचा के इस सम्बन्ध को कभी न छोड़ें। इस नई वाचा में आने की शर्तें बड़ी आसान हैं। मसीह में विश्वास और उस विश्वास का अंगीकार (रोमियों 10:9-10), साथ में अपने पापों से मन फिराकर अपने पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा (प्रेरितों 2:36-39)।

5

दो स्त्रियां और दो व्यवस्थाएं

दोनों वाचाओं को पूरी तरह से समझाने के प्रयास में पौलुस ने गलातियों 4:21-5:1 में हाजिरा और सारा नामक दो स्त्रियों के रूपक का इस्तेमाल किया। इस पाठ में मैं इसी कहानी को देखना चाहता हूं। ताकि हम सब को दोनों वाचाओं के बीच सम्बन्ध की बेहतर समझ आ सके। पहले हमें संदर्भ को देखना आवश्यक है। गलातियों की पुस्तक उन यहूदियों को लिखी गई थी जो अपनी पुरानी पहचान में वापस जाने यानी व्यवस्था के अधीन रहने की ओर लौटने की प्रतीक्षा में थे। यहूदी लोग अब्राहम की शारीरिक संतान होने का घमण्ड करते थे और इस कारण वे परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं और आशिषों को अपने लिए ही मानते थे। परन्तु पौलुस ने उन्हें याद दिलाया कि अब्राहम के दो बेटे थे। एक बेटा वायदे की संतान था जबकि दूसरा बेटा दासी की संतान था। एक को तो आशिर्षे मिलीं पर दूसरे को नहीं। इस कारण केवल अब्राहम की शारीरिक संतान होना परमेश्वर की आशिषों की गारंटी नहीं था। इस उदाहरण में हाजिरा सीनै पहाड़ और से उपर दी गई व्यवस्था को दर्शाती है जिसमें इश्माएल सांसारिक यरूशलेम के साथ जिसमें यहूदी जाति को दर्शाता है जिसका केंद्र आराधना सांसारिक यरूशलेम है। सारा कलवरी पर बांधी की एक नई वाचा को दर्शाती है जबकि इसहाक हर उस व्यक्ति को दर्शाता है जो मसीह में विश्वास के द्वारा उस नई वाचा का सदस्य बनता है।

जन्म

इश्माएल का जन्म बिल्कुल शारीरिक परिस्थितियों में हुआ था। उसका जन्म तब हुआ जब अब्राहम ने परमेश्वर की सामर्थ पर भरोसा किए बिना उसकी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने की परमेश्वर की सहायता करने की कोशिश की। उसके जन्म के साथ कोई प्रतिज्ञा नहीं थी। इस्राएल जाति शरीर की संतान और उसकी आशिर्षे अधिकतर शारीरिक ही हैं। एक का जन्म पुरानी वाचा में शारीरिक रूप में हुआ था। सो इसका सदस्य होने के लिए शरीर और लहू यानी उस वंश का होना आवश्यक था।

दूसरी ओर इसहाक का जन्म अलौकिक नियमों से हुआ। उसकी माता सारा अब्राहम की पत्नी थी। उसका जन्म प्राकृतिक था परन्तु उसका जन्म सम्भव बनाने के लिए परमेश्वर ने हस्तक्षेप किया। उसका जन्म परमेश्वर की प्रतिज्ञा के कारण था और वह विश्वास का परिणाम था। इसहाक

की संतान ने परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं के आत्मिक प्राप्तकर्त्ता हैं जोकि अधिकतर आत्मिक हैं। रोमियों की पुस्तक में पौलुस ने बार बार शारीरिक इस्राएल और आत्मिक इस्राएल में अंतर किया। इसहाक उस आत्मिक इस्राएल का प्रतीक है जिसका जन्म नये जन्म के साथ आत्मिक जन्म होता है, "वे न तो लहू से न शरीर की इच्छा से न लहू की इच्छा से परन्तु परमेश्वर की इच्छा से हैं" (यूहन्ना 1:13)। निकुदेमुस जब यीशु के पास आया तो उसने साथ नये जन्म की बात की यानी यह व्यक्ति के लिए नये सिरे से जन्म देना यानी जल और आत्मा से जन्म लेना आवश्यक है (यूहन्ना 3:3,5)। इस कारण यह पुरानी वाचा के शारीरिक जन्म के उलट आत्मिक जन्म की बात है।

शर्तें जिसके तहत वह रहते थे

हाजिरा और इश्माएल गुलाम थे। वे सीनै पहाड़ पर दी गई व्यवस्था को, या यूं कहें कि दस आज्ञाओं को दर्शाते थे। इस वाचा को जुआ बताया गया है जो उनके पूर्वज नहीं उठा पाए थे। जब तक हम पुरानी वाचा के तहत रहते हैं जब तक हम पाप और इस संसार के गुलाम हैं। सारा और इसहाक आजाद हुए। यरूशलेम में दी गई मसीह की वाचा हमें आजाद करती है। "मसीह ने स्वतन्त्रता के लिए हमें स्वतन्त्र किया है; अत: इसी में स्थिर रहो" (गलातियों 5:1)। मसीह में हम मूसा की व्यवस्था से मुक्त हो जाते हैं, पर हर व्यवस्था से नहीं। अब हम व्यवस्था के कारण नहीं बल्कि अनुग्रह के कारण परमेश्वर की सेवा करने के लिए स्वतन्त्र हैं। अब हमारा उद्धार अनुग्रह और विश्वास से हो सकता है और हमें पापों की क्षमा मिल सकती है जो कि पुरानी व्यवस्था में सम्भव नहीं था। स्वतन्त्रता का अर्थ पाप से झूठ नहीं बल्कि पाप से आजादी है।

दो बेटों की आत्मा

इश्माएल में गुलाम की यानी सताने वाली आत्मा थी। एक हाथ से दूध छुड़ाने के समय इश्माएल इसहाक का ठट्ठा उड़ाया और उसे सताया। इसका बाद में आत्मिक इस्राएल यानी कलीसिया के लिए अर्थ था। यहूदी जाति ने ही मुख्यतया मसीह और उसकी कलीसिया को सताया था।

इसहाक दुख उठाने वाला, दीन और आत्मिक व्यक्ति था। मसीह की कलीसिया को जल्द ही यहूदी अगुओं द्वारा सताया जाने लगा। "पर जितने मसीह यीशु में भक्ति के साथ जीवन बिताना चाहते हैं वे सब सताए जाएंगे" (2 तीमुथियुस 3:12)। पौलुस गलातियों को सिखाना चाहता था कि यह यहूदी मत में लाने वाले सचमुच में उनके शत्रु थे।

अंतिम परिणाम

इश्माएल वारिस नहीं क्योंकि उसे केवल एक गुलाम का भाग मिला था। जब इश्माएल ने इसहाक का ठट्ठा उड़ाया तो इसे सारा ने देखा था तो उसने अब्राहम को हाजरा और उसके बेटे को निकाल देने के लिए मना लिया। इश्माएल को क्यों निकाला गया? क्योंकि वह इसहाक के साथ वारिस नहीं होना था। इसका अर्थ यह था कि पुरानी वाचा को हटा दिया गया। इस्राएलियों को मिलनी वाली आशिषें सांसारिक कनान देश तक सीमित थी। उनका उद्धार अनंतकाल तक हो सकता था परन्तु यह पुराने नियम की व्यवस्था में नहीं था। उद्धार व्यवस्था को मानने से नहीं मिलना था।

प्रतिज्ञा का पुत्र होने के नाते इसहाक भी अब्राहम की जागीर का वारिस था। यह कलीसिया को दर्शाता है जो कि मसीह के साथ संगति वारिस है। "और यदि संतान हैं तो वारिस भी, वरन परमेश्वर के वारिस और मसीह के संगी वारिस हैं, कि जग हम उसे साथ दुख उठाए और उसके साथ महिमा भी पाएं" (रोमियों 8:17)। मसीही लोगों के रूप में हमें गुलामी से छुड़ाया गया है " इसलिए हे भाइयो, हम दासी के नहीं, परन्तु स्वतन्त्र स्त्री की सन्तान हैं। मसीह ने स्वतंत्रता के लिए हमें स्वतंत्र किया है; सो इसी में स्थिर रहो, और दासत्व के जूए में फिर से न जुतो" (गलातियों 4:31-5:1)। जैसा कि हमने देखा, नई वाचा की आशिषों का भाग पापों की क्षमा और अनन्त जीवन की प्रतिज्ञा है। व्यवस्था के आधीन जाने का अर्थ उस गुलामी में वापस जाना है।

सारांश

वाचाएं दो हैं, एक वह जो मूसा के द्वारा सीनै पहाड़ पर दी गई पुरानी वाचा और दूसरी क्रूस पर मसीह के द्वारा दी और बांधी गई नई वाचा। हमने देखा कि पुरानी वाचा ने नई वाचा ने पुरानी की जगह ले ली है पुरानी वाचा में जाने का अर्थ अनुग्रह से गिरना है (गलातियों 5:4)। हम दोनों को नहीं मान सकते। मसीह उसकी व्यवस्था में जो कि "स्वतंत्रता की सिद्ध व्यवस्था है" कुछ भी जोड़ना (याकूब 1:25)। मसीह को और उस वाचा से जुडी आशिषों को काम करना है।

6

नई वाचा की व्यावहारिक प्रासंगिकता

हमने देखा है कि पुरानी वाचा या पुराने नियम को हटा दिया गया है और अब हम नई वाचा या नए नियम के अधिकार के अधीन हैं। इसका हमारे जीवनों पर क्या प्रभाव पड़ता है? कुछ धार्मिक विचार जो आम तौर पर दिखाए और माने जाते हैं वे केवल पुराने नियम में बताए गए हैं और नये नियम में उनका कोई आधार नहीं है। इन आम व्यवहारों में से कुछ को संक्षेप से देखते हैं कि वे क्या हैं?

सब्त के दिन को मनाना

कुछ धार्मिक गुटों जैसे सैवंथ डे अडवेंटिस्ट चर्च का मानना है कि चौथी आज्ञा आज भी प्रभावी है। निर्गमन 20:8-11 में हम पढ़ते हैं, "तू विश्रामदिन को पवित्र मानने के लिये स्मरण रखना। छः दिन तो तू परिश्रम करके अपना सब काम काज करना; परन्तु सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिये विश्रामदिन है। उस में न तो तू किसी भांति का काम काज करना, और न तेरा बेटा, न तेरी बेटी, न तेरा दास, न तेरी दासी, न तेरे पशु, न कोई परदेशी जो तेरे फाटकों के भीतर हो। क्योंकि छः दिन में यहोवा ने आकाश, और पृथ्वी, और समुद्र, और जो कुछ उन में है, सब को बनाया, और सातवें दिन विश्राम किया; इस कारण यहोवा ने विश्रामदिन को आशीष दी और उसको पवित्र ठहराया। "परमेश्वर ने सातवें दिन आराम किया और सब्त के दिन सृष्टि की रचना के स्मरण के रूप में ठहराया, इसलिए यह तर्क दिया जाता है कि हमें आज सब्त के दिन को मनाना और इसे पवित्र मानना चाहिए।

सब्त के दिन की आज्ञा पत्थर पर लिखी उन आज्ञाओं में से एक थी और पौलुस ने साफ़ लिखा कि इस व्यवस्था को हटा दिया गया। "और यदि मृत्यु की वह वाचा जिस के अक्षर पत्थरों पर खोदे गए थे, यहां तक तेजोमय हुई, कि मूसा के मुंह पर के तेज के कारण जो घटना भी जाता था, इस्राएल उसके मुंह पर दृष्टि नहीं कर सकते थे। तो आत्मा की वाचा और भी तेजोमय क्यों न होगी? क्योंकि जब वह जो घटता जाता था तेजोमय था, तो वह जो स्थिर रहेगा, और भी तेजोमय क्यों न होगा?" (2 कुरिन्थियों 3:7, 8, 11)। इस कारण सब्त का अधिकार खत्म हो गया है। सब्त के दिन को मनाने की आज्ञा सीनै पहाड़ पर दी गई आज्ञाओं से पहले नहीं दी गई थी, और तब तक कोई इसे नहीं मनाता था। "फिर तू ने सीनै पर्वत पर उतरकर आकाश में से उनके साथ

बातें की, और उनको सीधे नियम, सच्ची व्यवस्था, और अच्छी विधियां, और आज्ञाएं दीं। और उन्हें अपने पवित्र विश्राम दिन का ज्ञान दिया, और अपने दास मूसा के द्वारा आज्ञाएं और विधियां और व्यवस्था दीं" (नहेम्याह 9:13-14)। ध्यान दें कि नहेम्याह ने कहा कि सब्त के दिन का नियम इस्राएलियों को केवल सीनै पहाड़ पर मूसा से ही पता चला था। यदि किसी को पता ही न हो कि कोई नियम है तो उसे मान नहीं सकता है। इसके अलावा आरम्भिक मसीही लेखों से हमें पता चलता है कि कलीसिया आरम्भ से ही सप्ताह के पहले दिन इकट्ठा होती और आराधना करती रही है।

वाद्य संगीत

अधिकतर धार्मिक गुट परमेश्वर की आराधना करते हुए साज़ों या वाद्य यंत्र का इस्तेमाल करते हैं। नये नियम में आराधना में साज़ों के इस्तेमाल का कोई अधिकार नहीं देता है। बल्कि हमें केवल गाने की आज्ञा ही मिलती है। बेशक यह सच है कि पुराने नियम में साज़ों के इस्तेमाल की आज्ञा है पर जो कुछ आज हम पढ़ते हैं उसके अधिकार के लिए पुराने नियम का इस्तेमाल नहीं किया जा सकता। वाद्य यंत्र या साज़, जैसे तुरही या वीणा के स्वर्ग में होने की बात प्रकाशितवाक्य में लिखी गई है पर उनके परमेश्वर की आराधना में इस्तेमाल की कोई बात नहीं है। इसके अलावा प्रकाशितवाक्य प्रतीकों और संकेतों की भाषा की पुस्तक है। स्वर्ग भी शारीरिक नहीं बल्कि आत्मिक है, तो फिर आत्मिक जगह में शारीरिक यन्त्र क्यों होंगे? धर्म को देने के लिए हमारा अधिकार नया नियम है और नये नियम की किसी पुस्तक में साजों यानी वाद्य यंत्रों का कोई उल्लेख नहीं है। इसे अलावा आरम्भिक कलीसिया आराधना में साजों इस्तेमाल नहीं करती है।

दशमांश

बहुत से धार्मिक संगठन अपने लोगों को दशमांश देने की आज्ञा देते हैं। दशमांश यानी आमदनी का दसवां भाग, देने की आज्ञा पुराने नियम में है, "फिर भूमि की उपज का सारा दशमांश, चाहे वह भूमि का बीज हो चाहे वृक्ष का फल, वह यहोवा ही का है; वह यहोवा के लिये पवित्र ठहरे" (लैव्यव्यवस्था 27:30)। इस्राएली लोग दशमांश वैसे न हीं देते थे जैसे उन्हें देना चाहिए, तौभी उन्हें इसकी आज्ञा दी गई। असल में यदि इस्राएली वैसे देते जैसे उन्हें देना चाहिए था तो यह दसवें भाग से अधिक बनता था।

पुराने नियम के तरीके के कारण कई संगठनों का मानना है कि हमें भी दशमांश देने की आज्ञा है। हमें की आज्ञा तो है पर दशमांश देने की आज्ञा नहीं है। "सप्ताह के पहिले दिन तुम में हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर चन्दा न करना पड़े" (1 कुरिन्थियों 16:2)। यहां हमें देने की आज्ञा मिलती है पर पौलुस आमदनी के अनुसार देने को कहता है, कितना देना यह यह स्पष्ट नहीं किया गया। पर इसका अर्थ यह नहीं है कि हम बहुत कम दे सकते हैं। यदि उस वाचा के अधीन जो नई वाचा से कम थी रहने वाले थे दशमांश देने की आज्ञा दी गई थी तो बेशक हम सब इस बात पर सहमत हो सकते हैं कि हमें उससे कहीं अधिक श्रेष्ठ वाचा के अधीन कम से कम इतना तो देना ही चाहिए। इस कारण

बेशक हमें दशमांस देने की आज्ञा नहीं है पर हमारे दशमांश देने का यह आरम्भ होना चाहिए न कि अंत। पौलुस मसीही लोगों को कुड़कुड़ या दबाव से नहीं बल्कि हर्ष से देने को कहा है (2 कुरिन्थियों 9:7)। जब कोई बताता है कि उसे कितना देना चाहिए तो वह देने की खुशी और स्वेच्छा को आसानी से निकाल सकता है, जिसके बिना किसी को आशीष नहीं मिल सकती।

परमेश्वर से सीधे प्रार्थना करें

पुरानी वाचा के तहत लोगों को आराधना में परमेवर के पास जाने के लिए याजक के पास से होकर जाना पड़ता था। लोग जानवरों के बलिदान चढ़ाते थे पर असल में बलिदानों को भेंट याजक करते थे। याजक ही आराधना में धूप जलाते थे। यूं कहें कि याजक मनुष्य और परमेश्वर के बीच खड़े होते हैं।

दूसरी ओर नई वाचा के तहत मनुष्य सीधे परमेश्वर तक पहुंच कर सकता है। आज कोई याजक नहीं हैं जिसके द्वारा परमेश्वर तक हम पहुंच करें क्योंकि हम सब याजक हैं, याजकों का पवित्र समाज जो आत्मिक बलिदान चढ़ाता है (1 पतरस 2:5)। हम जानवरों के बलिदान नहीं चढ़ाते पर हम बलिदान अवश्य चढ़ाते हैं और हमारे बलिदान अपने शरीरों के जीवित बलिदान होते हैं। "इसलिये हे भाइयो, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूं कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ। यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है" (रोमियों 12:1)। "इसलिए हम उसके द्वारा स्तुति रूपी बलिदान अर्थात उन होठों का फल जो उसके नाम का अंगीकार करते हैं, परमेश्वर के लिए सर्वदा चढ़ाया करें" (इब्रानियों 13:15)। एक बार फिर हम देखते हैं कि हम बलिदान भेंट करते हैं पर वे बलिदान हमारे अपने हैं। पुराने नियम के याजकों को परमेश्वर को धूप चढ़ाने की आज्ञा दी गई (निर्गमन 30:8)। आज हम धूप तो चढ़ाते हैं पर वह धूप जिसे हम चढ़ाते हैं वे हमारी प्रार्थनाएं हैं। "और जब उसने पुस्तक ले ली, तो वे चारों प्राणी और चौबीसों प्राचीन उस मेम्ने के सामने गिर पड़े; और हर एक के हाथ में वीणा और धूप से भरे हुए सोने के कटोरे थे, ये तो पवित्र लोगों की प्रार्थनाएं हैं" (प्रकाशितवाक्य 5:8)। ध्यान दें कि इस तथ्य के अलावा कि हर मसीही को परमेश्वर तक सीधे पहुंच करने की छूट है, परमेश्वर को हमारी आराधना और सेवा के आत्मिक पहलू पर जोर दिया गया है।

खतना

शारीरिक खतना पुराने नियम का चिह्न था। परमेश्वर के साथ अपनी वाचा के सम्बन्ध के चिह्न के रूप में हर यहूदी नर के शरीर का खतना किया जाता था। मसीही लोगों का भी खतना होता है पर यह खतना आत्मिक यानी हृदय का खतना है। "उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है" (कुलुस्सियों 2:11)। ध्यान दें कि पौलुस इस खतने को पुरानी वाचा के अधीन हाथों से किए जाने वाले शारीरिक खतने के उलट बिना हाथ लगाए किए जाने वाले आत्मिक खतने से मिलाता है। आत्मिक खतना को शरीर के पापों को उतारने के साथ मिलाया गया है। "पर यहूदी वही है जो मन में है; और खतना वही है जो हृदय का और आत्मा में है, न कि लेख का : ऐसे की प्रशंसा

मनुष्यों की ओर से नहीं, परन्तु परमेश्वर की ओर से होती है" (रोमियों 2:29)। फिर गलातियों 5:6 में पौलुस ने लिखा, "और मसीह यीशु में न खतना, न खतनारहित कुछ काम का है, परन्तु केवल, जो प्रेम के द्वारा प्रभाव करता है।"

कुछ लोग वाचा के चिह्न के रूप में बपतिस्मे को जोड़ना चाहते हैं पर पौलुस ने ऐसा नहीं कहा। कुलुस्सियों 2:12 में उसने आगे कहा, "और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे।" आत्मिक खतना तब होता है जब हम पानी में गाड़े जाते हैं। इस कारण बपतिस्मा खतना नहीं है बल्कि यह वह समय होता है जब परमेश्वर हमारे पापों को क्षमा करने के द्वारा आत्मिक रूप में हमारा खतना करता है। बपतिस्मे को नई वाचा के चिह्न या मोहर के रूप में कहीं नहीं बताया गया। इसके बजाय पवित्र आत्मा हमारी मोहर है (इफिसियों 4:30)।

सारांश

हमने कई धार्मिक व्यवहारों को संक्षेप में देखा जिन्हें आज माना जाता है पर बाइबल उन्हें अधिकार नहीं देते हैं बहुत हद तक यह इस तथ्य के कारण है कि लोग वाचाओं के अंतर को नहीं समझते हैं। हमने कुछ और बातें भी देखी हैं जिन्हें हम करते नहीं हैं जो पुरानी वाचा में की जाती थी और मुझे यकीन है कि आज कुछ और अंतरों पर भी विचार कर सकते हैं। परमेश्वर की सेवा में हम जो कुछ भी करते हैं उसके लिए यह पूछा जाना आवश्यक है कि हम किस अधिकार से करते हैं; परन्तु वह अधिकार नई वाचा यानी नये नियम में ही मिलता है। उम्मीद है कि इस अध्ययन से आपको वाचाओं में अंतर करने की बेहतर समझ मिली होगी जिससे आप परमेश्वर के वचन ठीक रीति से काम में ला सकें (2 तीमुथियुस 2:15)।

इन प्रश्नों को भरने के बाद इस भाग को काट कर डाक द्वारा **"Advance Bible Course, P.O. Box No. 44, Chandigarh-160017"** पर भेजें।

भाग - 1

विचार के लिए प्रश्न

1. वाचा क्या होती है?
2. वाचाएं किस पर लागू होती हैं?
3. चार लोगों के नाम बताएं जिनके साथ परमेश्वर ने वाचाएं बांधी हैं?
4. इस्राएल के साथ वाचा कहां बांधी गई?
5. आज धार्मिक जगत में पाई जाने वाली फूट का एक मुख्य कारण क्या है?

सही गलत बताएं

1. दाऊद के साथ परमेश्वर का मुख्य वायदा यह था कि उसका राज्य सदा तक रहेगा — सही/गलत
2. अब्राहम की वाचा में अंतिम प्रतिज्ञा यीशु की बात है। — सही/गलत
3. फलने-फूलने की बात बाइबल की आज्ञा है जो हर किसी पर लागू होती है — सही/गलत
4. मूसा की व्यवस्था सारी मनुष्यजाति के लिए दी गई थी — सही/गलत
5. दस आज्ञाएं वास्तव में मूसा की व्यवस्था का भाग नहीं हैं — सही/गलत

भाग - 2

प्रश्न

1. परमेश्वर ने इस्राएलियों से क्या प्रतिज्ञा की?
2. मूसा की व्यवस्था किसे दी गई थी?
3. परमेश्वर और आप के बीच क्या सम्बन्ध है?
4. शिक्षक क्या होता है?
5. परछाई क्या होती है?

सही गलत बताएं

1. इस्राएली लोग परमेश्वर की वाचा को मानने से हिचकते थे — सही/गलत
2. परमेश्वर चाहता था कि मूसा की व्यवस्था सदा तक रहे — सही/गलत
3. मूसा की व्यवस्था का एक उद्देश्य मनुष्य को पाप की गम्भीरता को समझाना था — सही/गलत
4. व्यवस्था का एक उद्देश्य सिद्ध बलिदान की आवश्यकता पर लोगों को शिक्षित करना था — सही/गलत

भाग - 3

प्रश्न

1. यीशु ने पुराने नियम को कब हटाने को कहा?
2. यीशु के यह कहने का क्या अर्थ था कि "पूरा हुआ"?
3. वसीयत कब प्रभावी होती है?
4. यीशु की वसीयत कब प्रभावी हुई?
5. मूसा की व्यवस्था कितनी तेजोमय थी?
6. आज की कुछ धार्मिक रीतियां बताएं जो केवल पुराने नियम में मिल सकती हैं?
7. नये नियम के अधीन की जाने वाली कुछ ऐसी बातें बताएं जो पुराने वाचा के अधीन की जाने वाली बातों से अलग हैं।

सही गलत बताएं

1. अब हम पुरानी व्यवस्था के अधीन नहीं रहे रहे तो इसका अर्थ यह हुआ कि उसका कोई महत्व नहीं है। सही/गलत
2. क्रूस पर नई वाचा ने पुरानी वाचा का स्थान ले लिया। सही/गलत
3. यह तथ्य की नई वाचा है इस बात का संकेत है कि पुरानी को हटा दिया गया है। सही/गलत
4. दस आज्ञाएं क्रूस पर हटाई जाने वाली व्यवस्था का भार नहीं थी सही/गलत
5. पुरानी व्यवस्था की एक ही गलती बात थी कि मनुष्य निर्बल था और व्यवस्था को पूरा नहीं कर सकता था? सही/गलत

भाग - 4

प्रश्न

1. पुरानी वाचा में याजक किस गोत्र से होते थे?
2. पुरानी वाचा के याजकों से यीशु उत्तम महायाजक क्यों है?
3. अब परमेश्वर का वचन उसके लोगों के ..... और ..... पर लिखा हुआ है।
4. पुरानी वाचा में जानवरों के बलिदान किस बात की ओर ईशारा करते थे?
5. आज हम किसके द्वारा पवित्र किए जाते हैं।

सही गलत बताएं

1. पुरानी वाचा के याजक श्रेष्ठ थे क्योंकि वह हमारी ही तरह धर्मी थे — सही/गलत
2. यीशु हमारी निर्बलता में हमारी सहानुभूति कर सकता है क्योंकि उसने भी हमारी ही तरह जीवन बिताया है — सही/गलत
3. नई वाचा अंदरूनी और आत्मिक है। — सही/गलत
4. पुरानी वाचा के लोग बनने का एक मात्र ढंग शारीरिक रूप में इसमें जन्म लेना है। — सही/गलत
5. नई वाचा में हम वाचा के लोग बनने से पहले परमेश्वर को

पुराना नियम	नया नियम
पहला, इब्रानियों 10:9	दूसरा, इब्रानियों 10:9
पुरानी, इब्रानियों 8:13	नई, इब्रानियों 8:13; 9:15
पृथ्वी पर महायाजक, इब्रानियों 5:1; 7:23	"स्वर्ग में" महायाजक इब्रानियों 8:1
लेवीय गोत्र से याजक, इब्रानियों 7:11	यहूदा के गोत्र से महायाजक, इब्रानियों 7:13–14
याजकों को मृत्यु आती थी, इब्रानियों 7:23	महायाजक युगानुयुग जीवित है, इब्रानियों 7:24
व्यवस्था का देने वाला: मूसा, मला. 4:4	व्यवस्था का देने वाला: यीशु मसीह, आमो.4:12
मध्यस्थ: मूसा, निर्ग. 20:19	मध्यस्थ: यीशु मसीह, इब्रानियों 9:15; 12:24
दोषपूर्ण वाचा, इब्रानियों 8:7	उत्तम वाचा, इब्रानियों 8:6
दोषपूर्ण प्रतिज्ञाएं, इब्रानियों 8:6	उत्तम प्रतिज्ञाएं, इब्रानियों 8:6
दोषपूर्ण,	उत्तम बलिदान,
बलिदानों का जारी रहना, इब्रानियों 9:9; 10:1–4	एक सिद्ध बलिदान, इब्रानियों 9:12
जानवरों का लहू, इब्रानियों 10:4	मसीह का लहू, इब्रानियों 9:12
पापों की क्षमा नहीं, इब्रानियों 10:4, 11	पापों की क्षमा, इब्रानियों 9:15; प्रेरितों 13:38
जानवरों के लहू के साथ बांधी गई, इब्रानियों 9:19	मसीह के लहू के साथ बांधी गई, इब्रानियों 9:18–28
पापी विवेक, इब्रानियों 10:1–3	शुद्ध किया हुआ विवेक, इब्रानियों 9:14; 1 पतरस 3:21
परमेश्वर के सामने कोई हियाव नहीं,	परमेश्वर के सामने हियाव, इब्रानियों 10:19

एक जाति के लिए, मला. 4:4,
अस्थाई, गला.3:19
शारीरिक, इब्रानियों 9:10
प्रतिरूप और प्रतिबिम्ब, इब्रानियों 9:24; 10:1
शरीर को शुद्ध करता, इब्रानियों 9:13
तेजोमय, 2 कुरिन्थियों 3:9–10
पत्थरों पर लिखी गई, 2 कुरिन्थियों 3:7,
जाती रही, 2 कुरिं. 3:11
उठा ली गई, इब्रानियों 10:9
मिटा दी गई, इफिसियों 2:15
से छूट गए, रोमियों 7:6
हटा दिया, कुलुस्सियों 2:14

सब जातियों के लिए, मत्ती 28:19–20
अंतिम वाचा, गला.1:6–9
आत्मिक, यूहन्ना 4:23–24
वास्तविकता, इब्रानियों 8:1–5
मनों को पवित्र करता, 1 पतरस 1:22
और भी तेजोमय, 2 कुरिन्थियों 3:9–10
दिलों पर लिखी गई, इब्रानियों 8:10
स्थिर है, 2 कुरिं.3:11
नियुक्त की गई, इब्रानियों 10:9
बनी रहती है, यूहन्ना 12:48
सदा सदा के लिए दी गई, यहूदा 3
दृढ़ और स्थिर किया गया, कुलुस्सियों 1:23

*लुइस रशमोर द्वारा संकलित किया गया

भाग - 5

प्रश्न

1. यहूदियों को इतना यकीन क्यों था कि परमेश्वर की प्रतिज्ञाएं और आशिषें उन्हीं की हैं?
2. हाजरा और इश्माएल क्या दर्शाती हैं?
3. इस कहानी में इसहाक की संतान कौन हैं?
4. मसीह में स्वतन्त्र होने का क्या अर्थ है?
5. इश्माएल को निकालने का क्या अर्थ था?

सही गलत बताएं

1. इसहाक का जन्म प्राकृतिक था परन्तु परमेश्वर की सामर्थ से आलौकिकता से हुआ था। सही/गलत
2. आज आरम्भ में कलीसिया को मुख्यतया रोमी साम्राज्य ने भी सताया था। सही/गलत
3. शारीरिक इस्राएल की आशिषें कनान देश तक सीमित थीं। सही/गलत
4. इसहाक के आत्मिक रूप में मसीह के लोग अब मसीह के साथ संगति वारिस हैं सही/गलत
5. यदि हम सचमुच में पमेश्वर के सेवक हैं तो हमें अधिक सताव नहीं सहना पड़ेगा। सही/गलत

भाग - 6

प्रश्न

1. पत्थरों पर कौन सी आज्ञाएं लिखी गई थीं?
2. नहेम्याह ने कहां यह कहा कि सबत के दिन की आज्ञा इस्राएलियों को दी गई थी?
3. आज जो धूप हम परमेश्वर को चढ़ाते हैं वह क्या है?
4. पुरानी वाचा का चिह्न क्या था?
5. बिना हाथ लगाए किया जाने वाला खतना क्या है?

सही गलत बताएं

1. दशमांश का अर्थ है अपनी आमदनी का दसवां भाग देना सही/गलत
2. नये नियम में गाने के साथ साजों का कोई इस्तेमाल नहीं है सही/गलत
3. आज हमें दशमांश देने की कोई आज्ञा नहीं है इसलिए परमेश्वर हम से बहुत कम देने की उम्मीद करता है। सही/गलत
4. नई वाचा का चिह्न या मोहर बपतिस्मा है? सही/गलत
5. नये नियम मंपरमेश्वर को हमारी आराधना और सेवा के आत्मिक पहलू पर जोर दिया गया है। सही/गलत